गुरुपूर्णिमा की कहानी

गुरुपूर्णिमा, भारत का एक प्राचीन पर्व है। यह उस समय की बात है जब भारतीय आध्यात्मिक परम्परा की नींव के रूप में चार वेदों की स्थापना हुई थी। वेदों के संकलनकर्ता, महाभारत एवं छत्तीस पुराणों के रचयिता, महर्षि वेदव्यास की प्रेरणा भी, गुरुपूर्णिमा के इस उत्सव का स्रोत बनी। गुरुपूर्णिमा, वह महोत्सव है जो श्रीगुरु के सम्मान में मनाया जाता है।

महर्षि वेदव्यास के शिष्यों का हृदय, अपने परमप्रिय श्रीगुरु से प्राप्त कृपा एवं अमूल्य ज्ञान के प्रति कृतज्ञता और आदर से भरा था। उनके मार्गदर्शन का पालन कर, उन्हें अनुभव हो गया था कि परम आत्मा तथा स्वयं उनकी आत्मा, दोनों एक ही हैं।

इस अनिश्चय की स्थिति में कि अपने श्रीगुरु को ऐसा क्या भेंट करें जो उनकी कृतज्ञता और गहरे सम्मान के भाव को व्यक्त कर सके, अतः शिष्यों ने महर्षि वेदव्यास से पूछा, "हे दिव्य प्रज्ञान के स्रोत, हम आपका सम्मान किस प्रकार कर सकते हैं?"

अत्यन्त करुणा के साथ महर्षि वेदव्यास ने अपने शिष्यों को बताया कि वे वर्ष का एक दिन चुनकर, उसे विशेषरूप से श्रीगुरु का सम्मान करने के लिए समर्पित कर सकते हैं। और इस दिन शिष्य, सदैव अपने श्रीगुरु को भेंट और उपहार अर्पित कर उनका सम्मान करेंगे।

महर्षि वेदव्यास जी के शिष्यों ने उनके मार्गदर्शन का अनुसरण किया। उन्होंने आषाढ़ माह की पूर्णिमा का दिन चुना क्योंकि यह पूर्णिमा, वर्ष की अन्य सभी पूर्णिमाओं से अधिक पूर्ण और उज्ज्वल मानी जाती है। यही दिन "गुरुपूर्णिमा" के नाम से जाना गया—"गुरुपूर्णिमा" यानी श्रीगुरु का पूर्ण चन्द्र।

गुरुपूर्णिमा की यह परम्परा युगों से चली आ रही है। सिद्धयोगी होने के नाते हम श्रीगुरु को कृतज्ञता अर्पित करने की इस परम्परा में भाग लेते हैं। हम सिद्धयोग के श्रीगुरुओं—गुरुमाई चिद्विलासानन्द, बाबा मुक्तानन्द और भगवान नित्यानन्द—की कृपा और शक्तिपात-दीक्षा के अनमोल उपहार के लिए उनका सम्मान करते हैं; हम उनके असीम प्रेम, करुणा और आशीर्वादों के लिए उनका सम्मान करते हैं, हम सिद्धयोग पथ की जीवन-रूपान्तरणकारी सिखावनियों और अभ्यासों के लिए उनका सम्मान करते हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।